# जलवायु परिवर्तन : संपूर्ण विश्व की एक बड़ी आपदा

गौरीशंकर वैश्व विनम्र

**विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''डाउन टु अर्थ'' ने वर्ष 1988 से 2018 तक 30 वर्षों के भारत मौसमविज्ञान विभाग (IMD) के आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए भारत के 28 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के 730 जिलों में से 676 को चयनित किया। आंकड़ों के अनुसार, 62 प्रतिशत जिलों में माह जून में वर्षा की कमी पाई गई, इससे खरीफ की बुआई प्रभावित हुई और कृषि उत्पादन बहुत कम हुआ। जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभाव के कारण ही शुष्क दिनों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, वर्षा कम होने से जनजीवन का संकट बढ़ा है और फसलों का उत्पादन कम हुआ है।**

आज संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन जैसी विकट समस्या से जूझ रहा है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के वैश्विक तथा क्षेत्रीय प्रभावों के कारण यह एक विचारणीय समस्या बनी हुई है।

सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिए गए क्षेत्र में दीर्घावधि तक माध्य मौसम से होता है। अतः जब किसी क्षेत्र विशेष के माध्य मौसम में परिवर्तन आता है, तो उसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। यदि वर्तमान संदर्भ में बात करें, तो इसका अत्यधिक वैश्विक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

सम्पूर्ण विश्व में अब सब कुछ बदल रहा है और आशंका है कि निकट भविष्य में यह अनेक संकटों को जन्म देगा। द वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन ग्रुप (WWAG) ने भारतीय उपमहाद्वीप के विषय में ग्रीष्म लहर (लू) के बारे में गंभीर भविष्यवाणी की है। भारतीय मौसम विभाग ने 122 वर्ष पूर्व के अभिलेखों के दस्तावेजीकरण के आरंभ होने के बाद से इस वर्ष मार्च माह को सबसे अधिक उष्ण माह घोषित किया है। यह तापमान औसत तापमान से लगातार 3 डिग्री सेल्सियस से 8 डिग्री सेल्सियस अधिक पाया गया, जिसने देश के कई भागों में कई दशक के उच्च तापमान के कुछ सर्वकालिक रिकॉर्ड तोड़ दिए।

भारत मौसमविज्ञान विभाग (IMD) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार माह जून तक कम वर्षा होगी और इसके बाद सितंबर माह से दीर्घावधि तक भारी वर्षा होगी। वर्ष 2008 के बाद से नौ वर्षों में जून में सामान्य से कम और छह वर्षों में सामान्य से अधिक मानसूनी वर्षा अंकित की गई है, इसका अर्थ यह है कि मानसून वास्तव में जुलाई से शुरू होता है, जबकि भारतीय कालगणना के अनुसार प्रति वर्ष वर्षा ऋतु आषाढ़ मास में प्रथम नक्षत्र आद्रा से प्रारंभ होती है।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के पूर्व सचिव एम. राजीवन के अनुसार-''हम मानसून के माह जून में देर से आने या कमजोर रहने और फिर माह सितंबर के बाद भी वर्षा जारी रहने की प्रवृत्ति देख रहे हैं।'' यह बदलाव विलंबित पश्चिमी विक्षोभ और जलवायु परिवर्तन के संकट के फलस्वरूप आर्कटिक समुद्री हिमगलन से जुड़ा हो सकता है। भारत को प्रभावित करने वाले पश्चिमी विक्षोभों की संख्या बढ़ रही है, किंतु उत्तर-पश्चिमी हिमालय में सर्दियों में वर्षा लाने वाले मजबूत विक्षोभों की संख्या वास्तव में घट रही है, जिससे कम हिमपात और अधिक ऊँचाई पर शुष्क स्थिति उत्पन्न हो रही है। कमजोर वर्षा के कारण उत्तर भारत में गर्मी में लगातार वृद्धि हो रही है।

विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''डाउन टु अर्थ'' ने वर्ष 1988 से 2018 तक 30 वर्षों के भारत मौसमविज्ञान विभाग (IMD) के आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए भारत के 28 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के 730 जिलों में से 676 को चयनित किया। आंकड़ों के अनुसार, 62 प्रतिशत जिलों में माह जून में वर्षा की कमी पाई गई, इससे खरीफ की बुआई प्रभावित हुई और कृषि

उत्पादन बहुत कम हुआ। जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभाव के कारण ही शुष्क दिनों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, वर्षा कम होने से जनजीवन का संकट बढ़ा है और फसलों का उत्पादन कम हुआ है।

चिंताजनक रूप से, रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकाला गया कि चरम मौसम की घटनाएं, जो कभी 100 वर्षों में एक बार घटित होने वाले मानी जाती थीं, अब पूर्व की तुलना में उनके घटित होने की 30 गुणा अधिक संभावना है। समान रूप से चिंताजनक बात यह है कि माह मार्च जहां सबसे शुष्क महीनों में से एक था और अप्रैल में होने वाली वर्षा भी उत्तर भारत की फसल उगाने वाले क्षेत्रों के लिए सामान्य से कम होती थी। इसके विपरीत, वर्तमान में केरल के कुछ भागों में बेमौसम वर्षा के कारण किसानों को धान की कटाई के लिए जलमग्न खेतों से गुजरना पड़ा। फिर भी किसानों को कम गुणवत्ता वाली फसल प्राप्त हुई।

जलवायु परिवर्तन से विश्व के कई भागों में गेहूँ से लेकर जौ और खाद्य तेलों का उत्पादन कम हो गया है, इससे इन सभी चीजों का पर्याप्त अभाव पाया जा रहा है। ऐसे में अपनी खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए जो देश विशुद्ध रूप से खाद्यान्न के आयात पर निर्भर हैं, उनके यहां भुखमरी की विकट समस्या उत्पन्न हो गई है।

**जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण**

- पृथ्वी का एक बड़ा भाग धीरे-धीरे पृथक होने से महाद्वीपों का निर्माण हुआ। धरती के विखण्डन ने महानगरीय धाराओं तथा वायु के प्रवाह को परिवर्तित कर दिया। जिसका प्रभाव जलवायु पर पड़ा।
- ज्वालामुखी विस्फोट से पर्याप्त मात्रा में सल्फर-आईऑक्साइड, सल्फर-ट्राई ऑक्साइड, क्लोरीन, जलवाष्प, धूलकण और राख चारों ओर फैल जाती हैं। जो जलवायु को अनेक वर्षों तक प्रभावित करती है।
- नासा के वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में बताया है कि आर्कटिक के भूतल में ग्रीनहाउस गैस मीथेन का विशाल भण्डार है जो आर्कटिक पर एकत्रित बर्फ को पिघला रही है। इस गैस से वातावरण गर्म हो रहा है। जिससे वैश्विक स्तर पर तापमान में वृद्धि हो रही है।
- ग्रीनहाउस प्रभाव एक ऐसी घटना है, जिसके द्वारा पृथ्वी का वायुमण्डल, गुजरते हुए सूर्य के प्रकाश में, कार्बन डाईआक्साइड, जलवाष्प तथा मीथेन जैसी गैसों की उपस्थिति में सौर विकिरण को अपने अंदर अवशोषित कर लेता है तथा पृथ्वी की सतह तथा निचले वातावरण को सामान्य से अधिक गर्म कर देता है।
- जीवाश्म आधारित ईंधन के दोहन से कार्बन-डाईऑक्साइड एवं नाइट्रोजन-डाईऑक्साइड जैसी गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि हुई है। इससे जलवायु परिवर्तन की समस्या विकराल हुई है और अम्लीकरण तथा वायु और जल प्रदूषण में भी वृद्धि हुई है।
- शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण लोगों की जीवनशैली में काफी परिवर्तन आया है। सम्पूर्ण विश्व में वाहनों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। इससे खतरनाक गैसों का उत्सर्जन, पर्यावरण को हानि पहुंचा रहा है।
- वनों और पेड़ों के अंधाधुंध कटान से हरित क्षेत्र कम हो रहा है, इससे जलवायु परिवर्तन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

**जलवायु परिवर्तन के प्रभाव**

जलवायु परिवर्तन के कारण सम्पूर्ण विश्व में इसका भीषण प्रभाव दिखने लगा है। अपने देश में ही वर्ष 2023 में देश के लगभग सभी राज्यों में किसी न किसी रूप में चरम मौसमी घटनाएं हुई हैं। देश में भारी वर्षा, बादल फटना, आकाशीय बिजली गिरना, सूखा, बाढ़, शीत लहर, भीषण गर्मी जैसी चरम मौसमी घटनाओं में वृद्धि हुई है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि विगत कुछ समय से तापमान में अप्रत्याशित वृद्धि देखी जा रही है। वैज्ञानिक मान रहे हैं कि अल नीनो के कारण विभिन्न मौसमी समस्याएं पाई जा रही हैं, यह समस्या भीषण ग्रीष्मकालीन/शीतकालीन स्थिति की हो सकती है। यह प्रभाव केवल अपने देश में ही नहीं, वरन् सारे विश्व में दृष्टिगोचर होगा।

**जलवायु में अचानक परिवर्तन**

कभी-कभी किसी स्थान पर अकस्मात जलवायु परिवर्तन किसी प्राणी या पौधे के लिए अनुकूल नहीं होता है। स्थान परिवर्तन से व्यक्ति बीमार पड़ जाता है। घने कोहरे के कारण विमानों की उड़ानें स्थगित हो जाती हैं। लू का अत्यधिक प्रकोप होने के कारण घर से निकलना कठिन हो जाता है। यह सब जलवायु में अचानक परिवर्तन के कारण होता है। यह प्राणी का परिस्थिति के साथ सामंजस्य स्थापित न कर पाने के कारण होता है। अस्थायी जलवायु परिवर्तन से शारीरिक और मानसिक स्थिति, परिवर्तित परिवेश में असंतुलित हो जाती है। जीवन में उद्भव और नई प्रजातियों के विकास में भी पर्यावरण अनुकूलन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

**माध्य तापमान में वृद्धि**

आने वाले दशकों में दुनियाभर में माध्य तापमान में वृद्धि होने की संभावना है। उच्च अक्षांशों में बढ़ते माध्य तापमान से मौसम का प्रभाव सकारात्मक, किंतु उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में प्रभाव हानिकारक होने की संभावना है। भारत में पर्वतीय प्रदेशों के तापमान में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई है।

**चरम मौसमी घटनाओं से आजीविका पर संकट**

बार-बार होने वाली चरम मौसमी घटनाएं जैसेः सूखा, बाढ़ और चक्रवात आदि आजीविका को नष्ट करती हैं। इसके कारण अधिक गरीबी और भुखमरी बढ़ जाती है। फल-फूल तथा फसलों की गुणवत्ता घटने के साथ ही उत्पादकता कम हो जाती है। इससे जानवरों और पौधों की अनेक प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं।

**सूखा**

जलवायु परिवर्तन के कारण कम

जलवायु परिवर्तन का पर्यावरण पर प्रभाव।

**जलवायु परिवर्तन से विश्व के कई भागों में गेहूँ से लेकर जौ और खाद्य तेलों का उत्पादन कम हो गया है, इससे इन सभी चीजों का पर्याप्त अभाव पाया जा रहा है। ऐसे में अपनी खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए जो देश विशुद्ध रूप से खाद्यान्न के आयात पर निर्भर हैं, उनके यहां भुखमरी की विकट समस्या उत्पन्न हो गई है।**

वर्षा की अवधि का परिणाम भयावह होता है। इससे सूखे की तीव्रता, आवृत्ति और सूखा अवधि में वृद्धि की संभावना रहती है। सूखे से कृषि उत्पादन में हानि होती है। इससे खाद्यान्न का कम उत्पादन हो पाता है, फल-सब्जियों का उत्पादन कम होने से वे महंगी हो जाती हैं। पशुओं को अपेक्षित चारा न मिल पाने के कारण पशुधन की मात्रा और उत्पादकता कम हो जाती है।

**वर्षा के प्रारूप में परिवर्तन**

विगत कुछ दशकों से बाढ़, सूखा और वर्षा आदि की अनियमितता बहुत बढ़ गई है। यह जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप हो रहा है। इससे मरूस्थलों का फैलाव एक बड़ी समस्या के रूप में उभरा हे। पहले से जल की समस्या झेल रहे क्षेत्र में जल की मात्रा में कमी और भूजल-स्तर में गिरावट आने के कारण जल का संकट और बढ़ गया है।

**ग्रीष्म लहर**

ग्रीष्म (मई-जून) ऋतु में कुछ दिन ग्रीष्म लहर अर्थात लू चलना सामान्य बात है। यह ग्रीष्म ऋतु की एक प्रमुख प्राकृतिक घटना है, किंतु विगत कुछ वर्षों से ही मौसम में वह समानता नहीं दिखी, जो प्रायः 5-10 वर्षों पहले होती थी। वर्ष 2023 में जुलाई सबसे गर्म मास था। वर्ष 2024 की ग्रीष्म लहर हम पूरे मई-जून मासों से झेलते आ रहे हैं। यह जलवायु परिवर्तन का ही गंभीर संकेत है और हम प्रकृति के महाप्रकोप का प्रहार सहन करने के लिए विवश हैं। वर्ष 2024 में लू से हजारों की संख्या में लोगों की मृत्यु हो चुकी है और बड़ी संख्या में लोग बीमार हुए हैं।

लंबे समय तक चलने वाली ग्रीष्म लहर ने वनाग्नि के लिए शुष्क परिस्थितियां पैदा की हैं। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार ब्राजील में 2019 से अब तक अमेजन के जंगलों में कुल 74,155 बार आग लग चुकी है। अभी कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में भयंकर आग लगी थी, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को स्पष्ट करती है। अधिक तापमान के कारण हिमनदों के पिघलने से भू-स्खलन तथा हिम-स्खलन की घटनाएं सामान्य हो गई हैं।

**वन्यजीव प्रजाति को हानि**

तापमान में अत्यधिक वृद्धि तथा वनस्पति पद्धति में बदलाव ने कुछ पक्षी-प्रजातियों को विलुप्त कर दिया है। वन्य-जीव प्रतिकूल मौसम के कारण जंगलों से मानव की बस्ती में आ रहे हैं। उन्हें आहार, जल और निवास उचित मात्रा में नहीं मिल रहा है, जिससे उनका जीवन संकट में है। विशेषज्ञों के अनुसार पृथ्वी की एक चौथाई पक्षियों की प्रजातियां वर्ष 2050 तक विलुप्त हो सकती हैं। वर्ष 2008 में ध्रुवीय भालू को उन जानवरों की सूची में रखा गया था जो समुद्री जल स्तर में वृद्धि के कारण विलुप्त हो सकते हैं।

**रोगों का प्रसार और आर्थिक हानि**

जलवायु परिवर्तन के फलस्वरूप भविष्य में मलेरिया, डेंगू, स्वाइन फ्लू जैसी गंभीर बीमारियां और बढ़ेंगी तथा इन्हें नियंत्रित करना कठिन होगा। इससे मृतकों की संख्या में अधिक वृद्धि सकती है और विश्व को अत्यधिक आर्थिक हानि हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन से खतरे में मानव।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव।

**प्रकृति पर प्रतिकूल प्रभाव**

जलवायु परिवर्तन से प्रकृति भी अछूती नहीं है। इसके दुष्प्रभाव के कारण सम्पूर्ण विश्व में वर्ष 2024 में बसंत समय से पूर्व ही आ गया, क्योंकि गर्मी समय से पहले ही आ गई। जापान और मैक्सिकों में समय से पहले ही फूल खिल गए। भारत में आम के वृक्षों में समय पूर्व ही बौर आ गया। यूरोप में तेजी से बर्फ पिघलने लगी। टेक्सास में अत्यधिक गर्मी पड़ती है, वहां का तापमान बहुत बढ़ चुका है। अपने देश के कई प्रदेशों के शहरों का तापमान 45 से 55 डिग्री सेल्सियस रहा। इससे मानव ही क्या सभी पशु-पक्षी और वनस्पति त्राहि-त्राहि कर उठे। यह स्थिति अत्यंत गंभीर है और आशंका है कि आने वाले समय में शायद हवा, मिट्टी, पानी की कमी तो झेलेंगे ही, हमारे स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ेगा।

वैज्ञानिकों के अनुसार वर्ष 2024 के अंत तक अल नीनो समाप्त होने से थोड़ी राहत मिलेगी, परंतु पुराने अनुभव बताते हैं कि जब प्रकृति अपने लक्ष्य से भटक जाती है, तब सटीक स्थिति का पता नहीं चलता। अपने देश में पश्चिमी विक्षोभ की समयावधि में परिवर्तन के कारण जो वर्षा दिसंबर में होनी थी, वह मार्च में हुई। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर माना गया कि वर्ष 2024 में ग्रीष्म ऋतु में लगभग एक दशक पूर्व का रिकॉर्ड टूट गया और 99 प्रतिशत आशंका है कि हम आने वाले समय में और अधिक गर्मी झेलेंगे।

**हिमनदों का पिघलना**

हिमनदों के पिघलने से प्रारंभ में जल निकाय में प्रवाहित जल की मात्रा में वृद्धि होती है जो अपवाह के पैटर्न को बढ़ाते हैं। अंततः हिमनदों के पिघलने से वर्ष-प्रति-वर्ष जल की उपलब्धता अधिक होगी, क्योंकि यह जलवायु, हिम और

वृक्षों की कटाई से जलवायु परिवर्तन पर नकारात्मक प्रभाव।

वर्षा पर निर्भर करेगी।

**चक्रवातों से क्षति**

ऊष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के कई भागों में, ऊष्णकटिबंधीय चक्रवात में किसी क्षेत्र को तबाह करने की पूर्ण क्षमता होती है, जिससे जन जीवन की क्षति होती है और कृषि फसलों, भूमि, बुनियादी ढाँचे और आजीविका का व्यापक विनाश होता है। अध्ययन से पता चला है कि भविष्य में तेज हवाओं और वर्षा के कारण अधिक तीव्र चक्रवात आ सकते हैं।

**समुद्र के जल स्तर में वृद्धि**

समुद्र के माध्य जल स्तर में वृद्धि होने से आने वाले दशकों या शताब्दियों में कृषि भूमि के जलमग्न होने और भूजल के खारे होने का खतरा है। इस स्थिति में तूफानी लहरों का प्रभाव बढ़ेगा, जिससे जन-धन को भारी तबाही का सामना करना पड़ेगा।

**स्वास्थ्य और पोषण में परिवर्तन**

जलवायु परिवर्तन में श्वांस रोग और दस्त सहित विभिन्न बीमारियों को प्रभावित करने की क्षमता है। रोग के परिणामस्वरूप शरीर में भोजन से पोषक तत्वों को अवशोषित करने की क्षमता कम हो जाती है और बीमार लोगों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं में वृद्धि होती है। एक समुदाय में खराब स्वास्थ्य के कारण श्रम उत्पादकता में भी कमी आती है।

**वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु प्रयास**

जलवायु परिवर्तन आज वैश्विक समस्या है। जिसके लिए विगत कई वर्षों से प्रयास किए जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रबोधन हेतु अंतः शासकीय पैनल (IPCC) की स्थापना वर्ष 1988 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) एवं विश्व मौसमविज्ञान संगठन (WMO) के द्वारा की गई, जिससे विश्व की सरकारों को एक स्पष्ट वैज्ञानिक दृष्टिकोण उपलब्ध कराया जा सके।

IPCC नियमित रूप से जलवायु परिवर्तन के बारे में वैज्ञानिक रिपोर्ट, जिसे मूल्यांकन रिपोर्ट भी कहते हैं, जारी करता है। इसकी प्रथम रिपोर्ट वर्ष 1990 में जारी हुई थी जिसमें जलवायु परिवर्तन को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया गया था। वर्ष 2014 में जारी पांचवीं रिपोर्ट में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन से वैश्विक तापमान में वृद्धि का अनुमान व्यक्त किया गया है। इसे वर्ष 2020 तक नियंत्रित करने की सिफारिश की गई विश्व के कई देशों में जलवायु परिवर्तन से संबंधित कई वैश्विक सम्मेलन भी हुए हैं।

**भारत के प्रयास**

भारत द्वारा वर्ष 2008 में जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) का शुभारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों एवं विभिन्न शासकीय संस्थानों द्वारा, वैज्ञानिकों, उद्योगों और समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरों और उससे बचने के उपायों के बारे में जागरूक करना है। इस कार्य योजना में मुख्यतः 8 मिशन सम्मिलित हैं:-

- राष्ट्रीय सौर मिशन
- विकसित ऊर्जा दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन
- राष्ट्रीय जल मिशन
- सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन
- हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन
- जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन

जलवायु परितर्वन से निपटने हेतु भारत में एक अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरूआत हुई है। इस सौर गठबंधन का प्रारम्भ भारत और फ्रांस ने 30 नवंबर 2015 को पेरिस जलवायु सम्मेलन में किया। इसका मुख्यालय गुरुग्राम (हरियाणा) में है। इस गठबंधन का प्रमुख उद्देश्य वैश्विक स्तर पर 1000 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता प्राप्त करना, 2030 तक भारत देश के सकल घरेलू उत्पाद में 30-35

**जलवायु परितर्वन से निपटने हेतु भारत में एक अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरूआत हुई है। इस सौर गठबंधन का प्रारम्भ भारत और फ्रांस ने 30 नवंबर 2015 को पेरिस जलवायु सम्मेलन में किया। इसका मुख्यालय गुरुग्राम (हरियाणा) में है। इस गठबंधन का प्रमुख उद्देश्य वैश्विक स्तर पर 1000 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता प्राप्त करना, 2030 तक भारत देश के सकल घरेलू उत्पाद में 30-35 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन कम करना तथा 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन से 40 प्रतिशत ऊर्जा प्राप्त करना है।**

**जलवायु परिवर्तन, बड़ी चुनौती के रूप में मानवता के समक्ष खड़ा है। जैसे-जैसे तापमान में वृद्धि होगी, वैसे-वैसे ही गंभीर व्यापक और न सुधारे जा सकने वाले प्रभाव सामने आएंगे। खाद्य सुरक्षा के संकट के साथ जल, जंगल और जमीन पर आश्रित रहने वाले प्राणियों पर भी इसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होगा। अतः समय आ गया है कि संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन की इस चुनौती के लिए एकजुट हो जाए।**

प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन कम करना तथा 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन से 40 प्रतिशत ऊर्जा प्राप्त करना है।

भारत सरकार ने वर्ष 2030 तक 33 प्रतिशत वन क्षेत्र में वृद्धि का लक्ष्य रखा है। जिसके अन्तर्गत वर्ष 2015 से 2030 तक 6.2 अरब वृक्षारोपण का लक्ष्य है।

**जलवायु परिवर्तन का खतरा कम करने के लिए सुझाव**

जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। जलवायु परिवर्तन के खतरों को गंभीरता से लेते हुए, संपूर्ण विश्व को एकजुट होकर इस क्षेत्र में यथाशीघ्र सकारात्मक प्रयास किए जाने चाहिए, जिससे यदि हम खतरों को रोक न सकें, तो भी जन धन की क्षति कम से कम हो। हमें सोचना चाहिए कि इन बदलावों से हम कैसे सामंजस्य स्थापित करें।

प्राकृतिक आपदाओं को रोकने के लिए या उससे होने वाली क्षति को कम करने के लिए आपदा प्रबंधन रणनीति बनानी चाहिए।

हमें सतत कृषि पद्धतियों को अपनाना होगा। जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए कृषि नीति के अंतर्गत फसल उत्पादकता में सुधार और सुरक्षा जाल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जल संसाधनों का श्रेष्ठ प्रबंधन, स्थायी कृषि की एक प्रमुख विशेषता होनी चाहिए।

**गरीबी कम करने के लिए खाद्यान्न**

असुरक्षित लोगों की आजीविका में सुधार की आवश्यकता है। उन्हें न केवल गरीबी और भूख से बचने में सहायता मिले, अपितु उन्हें जलवायु सम्बन्धी आपदाओं का सामना करने, उनसे उबरने और अनुकूल होने में भी सहायता मिल सके।

खेतों में पराली जलाने से वायु प्रदूषण में वृद्धि के कारण जलवायु परिवर्तन पर कुप्रभाव।

शहरी भारत न केवल वैश्विक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है, अपितु जलवायु परिवर्तन का शिकार भी है। इसकी जनसंख्या का अधिकांश भाग गरीब लोगों का है। अतः ध्यान रखा जाए कि जलवायु परिवर्तन का शहरी खाद्य सुरक्षा पर व्यापक प्रभाव न पड़े।

**जलवायु**

लचीली रणनीतियों को विकसित करने के लिए और पर्याप्त नीतिगत हस्तक्षेप करने के लिए भारत की खाद्य सुरक्षा पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के एकीकृत मूल्यांकन की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सभी देशों को समन्वयपूर्ण लक्ष्योन्मुखी कार्यों को मिलकर करने की आवश्यकता है।

पेड़-पौधे जलवायु परिवर्तन के प्रथम पंक्ति के योद्धा हैं। वे वैश्विक उत्सर्जन का 33 प्रतिशत से अधिक भाग अवशोषित करते है। इसके साथ ही पशु-पक्षी और कीट-पतंगों को प्राकृतिक आवास भी उपलब्ध कराते हैं। अतः पेड़ों का कटान रोका जाए और अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए।

**सारांशः** जलवायु परिवर्तन, बड़ी चुनौती के रूप में मानवता के समक्ष खड़ा है। जैसे-जैसे तापमान में वृद्धि होगी, वैसे-वैसे ही गंभीर व्यापक और न सुधारे जा सकने वाले प्रभाव सामने आएंगे। खाद्य सुरक्षा के संकट के साथ जल, जंगल और जमीन पर आश्रित रहने वाले प्राणियों पर भी इसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होगा। अतः समय आ गया है कि संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन की इस चुनौती के लिए एकजुट हो जाए।

जलवायु परिवर्तन का सामना करने और पर्यावरण संतुलन के लिए भारत सहित विश्व के सभी देश प्रयासरत हैं। अक्षय ऊर्जा प्रतिष्ठानों को स्थापित करने में हुई प्रगति, विद्युत वाहनों की बढ़ती संख्या और देश को हरित ऊर्जा विद्युत गृह में बदलने के प्रयास सरकार द्वारा किए जा रहे हैं, जो एक स्वागत योग्य कदम है। हमें लाखों लोगों को जलवायु संकट से बचाना है, इसमें न केवल मनुष्य, अपितु पशु-पक्षी, पेड़-पौधों, वन-पर्वत, खाद्यान्न, जड़ चेतन आदि सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं जो परिवार, प्रकृति और पर्यावरण से सम्बद्ध हैं। सभी प्राणियों के लिए भोजन, पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की सुनिश्चित पूर्ति की जानी चाहिए।

हमें प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन रणनीति बनानी चाहिए, जिससे यदि आपदा को रोक न सकें तो कम से कम उसके प्रभाव को कम किया जा सके। हम अपनी नीतियों का परिस्थितिक दृष्टिकोण से अवलोकन कर लें, अन्यथा बाद में प्राकृतिक आपदाएं अधिक सोचने का अवसर नहीं देंगी और सब कुछ नष्ट हो जाएगा। प्रकृति के संकेतों को समझने में ही हमारी भलाई है।

संपर्क करें:
**गौरीशंकर वैश्व विनम्र**
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ-226 022
मो.: 09956087585